अध्याय : 6

स मा प न

अध्याय : 6

स मा प न

संस्कृत कविकुलगुरू महाकवि कालिदास भारत-भारती के अमर गायक हैं। उनकी जीवनी के बारे में ठोस जानकारी अभी तक प्राप्त नहीं हुई है। उनकी जन्मतिथि तथा जन्मभूमि के बारे में भी विद्वानों में मतभेद हैं। तथापि कालिदास को सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय "विक्रमादित्य" के नवरत्नों में से एक माना जाता है। उसके साहित्य में प्रतिबिंबित सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थितियों के चित्रण से इस बात को विशेष पुष्टि मिलती है। कालिदास की पत्नी का नाम प्रियंगुमंजरी है जो गुप्तवंश की कलाभिरूचिसंपन्न राजदुहिता है और वही कालिदास के साहित्य की सबल प्रेरणा है। कालिदास के साहित्य का और एक प्रेरणास्त्रोत प्राकृतिक सौन्दर्य है। कालिदास संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित हैं। उनका संस्कृत भाषा पर पूरा अधिकार है।

कालिदास की ग्रन्थ-संपदा पर चार काव्यग्रन्थ और तीन नाट्यग्रन्थ सर्वमान्य हुए हैं। काव्यग्रन्थों में "ऋतुसंहार","मेघदूत","रघुवंश","कुमारसम्भव" और नाट्यग्रंथों में "मालविकाग्निमित्र","विक्रमोर्वशीय" तथा "अभिज्ञानशाकुन्तल" समादरणीय है। "ऋतुसंहार" का षड़ऋण वर्णन प्राकृतिक सौन्दर्य का अनूठा चित्र है। "रघुवंश" का अज-विलाप और "मेघदूत" का यक्ष का विलाप विप्रलम्भ के उत्कट उदाहरण हैं। कालिदास का "अभिज्ञानशाकुन्तल" नाटक अमर कवि की अमर रचना है। भारतीय और विदेशी विद्वानों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। "अभिज्ञानशाकुन्तल" की शकुन्तला निसर्गकन्या के रूप में अमर हुई है। कवि की काव्य-प्रतिभा "उपमा कालिदासस्य" तथा "काव्येषु नाटकं रम्यंम्" उक्तियों से विभूषित है।

गुप्तकाल को प्राचीन भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है। महाकवि कालिदास ने इस स्वर्णयुग का स्वर्णिम शब्दों में अंकन किया है। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक,

धार्मिक, सांस्कृतिक चित्रण में महाकवि कालिदास कामयाब हुए हैं। इसीलिए तो कालिदास को "राष्ट्रीय कवि" माना गया है। गुप्तसम्राट द्वारा कालिदास का राजसम्मान और मातृगुप्त अभिधान कालिदास की अमर कला का यथोचित सम्मान है।

कालिदास की काव्यप्रतिभा और नाटयकला से अनेक महानुभाव प्रभावित हुए हैं। हमारे हिन्दी साहित्यकारों में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा प्रचुर मात्रा में प्रभावित होकर उन्होंने हिन्दी नाटय जगत को दो ऐसे नाटक दिये है जो हिन्दी नाटय साहित्याकाश में मानो दो जगमगाते तारें ही है। दोनों नाटयकारो ने कालिदास को केन्द्रबिंदु मानकर ही अपने नाटकों का सृजन किया है। कालिदास के चरित्र-चित्रण में दोनों नाटककारों का अपना-अपना दृष्टिकोण है जिसे भूला नहीं जा सकता।

नाटककार मोहन राकेश के "आषाढ का एक दिन" का कालिदास इतिहास सम्मत कम है और काल्पनिक ज्यादा है लेकिन मोहन राकेश की कल्पना का कालिदास सच्चे अर्थ में इतिहास के छूटे हुए पन्नों को जोडनेवाला मानवीय कालिदास है। यद्यपि संस्कृत महाकवि कालिदास निश्चय ही अपनी असाधारण काव्यप्रतिभा और नाटयकला के कारण कीर्ति के अत्युच्च शिखर पर आरूढ हुआ है और लागों के दिल में उसका महान व्यक्तित्व समा हुआ है। फिर भी कोई महाकवि मानवीय धरातलपर कभी दुर्बल, कभी कमजोर, कभी लचीला, कभी मोहग्रस्त, कभी हताश, कभी निराश हो सकता है। इस दृष्टि से नाटककार मोहन राकेश का कालिदास पुरातन कालिदास का नया रूप है।

मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" के कालिदास का यह नया रूप स्वातंत्र्योत्तर रचनाकार का असली रूप हो सकता है। इतना ही नहीं नाटककार मोहन राकेश ने इस दुनिया में जो कुछ भोगा है उसकी प्रतिकृति 'आषाढ़ का एक दिन' का कालिदास है। जहाँ विद्वानों ने कालिदास की पत्नी राजदुहिता प्रियंगुमंजरी को कालिदास के साहित्य के साधना की प्रेरणा माना है वहाँ हमारे नाटककार मोहन राकेश ने एक देहाती सौंदर्यवती मालिका को कालिदास की प्रेयसी के रूप में प्रेरणास्त्रोत माना हैं। कालिदास की प्रेयसी मल्लिका थी या नहीं यह हमें इतिहास के संदर्भ

में मालूम नहीं पडता है लेकिन देहाती नारी के सौंदर्य से और उसकी भावमूलक प्रणयासक्ति से कोई भी रचनाकार अभिभूत होकर महान साहित्य की रचना कर सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं। अपनी दरिद्रता के कारण आज का साहित्यकार राज्याश्रय की तलाश में घूमता-फिरता नजर आता है, सम्मान भी पाता है और कालान्तर में राजनीति से उबकर टूट भी जाता है। उसका मोहभंग होता है। "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास ऐसा ही कालिदास है जो परिस्थिति का दास है। और मनोविज्ञान के धरातलपर खंडित व्यक्तित्ववाला है। आज के टूटे हुए, हारे हुए, थके हुए मानव की अभिनव सृष्टि मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास है। रंगमंच पर कालिदास का यह द्वन्द्वात्मक, विभाजित व्यक्तित्व देखकर दर्शक सहज ही आकृष्ट होकर सोचने लगते हैं कि हमने संस्कृत महाकवि कालिदास को जरूर नहीं देखा है लेकिन "आषाढ़ का एक दिन" के कालिदास को इस रूप में देखा हैं कि वह रूप और किसी का नहीं, आज के लेखक या कवि का यथार्थ रूप है। देश और विदेशों में "आषाढ़ का एक दिन" के जो अनेक सफल नाटय प्रयोग हुए हैं और नाटय निर्देशकों ने अपनी-अपनी अलग-अलग दृष्टि से कालिदास को मंचपर दर्शाया है वह कालिदास निश्चय ही आधुनिक कवि या लेखक का प्रोतरूप है।

मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में चित्रित कालिदास के बाद नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने "आठवाँ सर्ग" नाटक में और एक कालिदास को चित्रित किया है। "आठवाँ सर्ग" का कालिदास ऐतिहासिक अधिक और काल्पनिक कम है। नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने "आठवाँ सर्ग" नाटक में संस्कृत महाकवि कालिदास की एक अमर रचना "कुमारसम्भव" के आठवें सर्ग को परिलक्ष्यित करते हुए अपना कालिदास चित्रित किया है। महाकवि कालिदास का "कुमारसम्भव" प्रसिद्ध महाकाव्य है लेकिन इसके आठवें सर्ग में उमा और महादेव की केलिक्रीड़ा का वर्णन किया जानेपर इस सर्ग को अश्लील घोषित किया गया। और "कुमारसम्भव" अधूरा ही रह गया। महाकवि कालिदास के "कुमारसम्भव" के आठवें सर्ग के रेखांकित उमा-महादेव की उद्दाम प्रणय क्रीडाओं को ध्यान में रखकर सुरेन्द्र वर्मा ने अपना "आठवाँ सर्ग" नाटक लिखा है। इस नाटक में सुरेन्द्र वर्मा ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर साहित्य

में अश्लीलता के प्रश्न पर सोच-विचार किया है। सुरेन्द्र वर्मा ने इस नाटक में यह दर्शाया है कि जिस प्रकार सम्राट चन्द्रगुप्त के समय हुए कालिदास के "कुमारसम्भव" को अश्लील घोषित कर उस पर बंदी लगायी गयी थी उस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर भारत में आपात्कालीन स्थिति में आज के रचनाकारों की रचनाओं पर बंदी लगायी जा सकती है। अश्लीलता के प्रश्न को लेकर सुरेन्द्र वर्मा ने यह भी दर्शाया है कि जिसप्रकार गुप्तकाल में साहित्य में श्लीलता-अश्लीलता को लेकर वादविवाद हो जाता था और न्यायसमिति नियुक्त की जाती थी उसी प्रकार वर्तमान काल में भी न्यायसमिति नियुक्त की जाती है। यह न्यायसमिति ऐसी होती है कि उसके सदस्य और अध्यक्ष साहित्य के बिलकुल पारखी नहीं होते है। "आठवाँ सर्ग" में जिस न्यायसमिति का वर्णन किया गया है वह आज की सरकार द्वारा नियुक्त न्यायसमिति का ही उदाहरण है।

सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" का कालिदास स्वाभिमानी है। व्यक्तिस्वातंत्र्य का हिमायती है और राजकीय मान-सम्मान को ठुकराने वाला है। "अभिज्ञानशाकुन्तल" के स्वर्णजयन्ती के उपलक्ष्य में मनाये गये समारोह में और नाट्यमंचन के समय कालिदास उपस्थित नहीं रहता है लेकिन "अभिज्ञानशाकुन्तल" का प्रयोग देखकर आम जनता ही कालिदास को सर्वश्रेष्ठ नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित करती है। सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" का कालिदास रचनाकार की व्यक्ति-स्वातंत्र्य का द्योतक है। आधुनिक सर्वश्रेष्ठ रचनाकारों को न्याय दिलाने का एक नया मार्ग खोज निकाला है जो उचित ही है। सुरेन्द्र वर्मा का "आठवाँ सर्ग" का यह कालिदास इतिहासपुरुष होकर भी कालिदास के ऐतिहासिक मिथक को नई अर्थवत्ता प्रदान करने वाला आधुनिक कालिदास है।

गुप्तकालीन राज-सी मंच-सज्जा पर खेले गये इस नाटक का कालिदास नाटक के प्रथम अंक में श्रृंगारी कवि के रूप में नजर आता है। कालिदास और प्रियंगुमंजरी की प्रणयलीलाओं का अन्य पात्रों द्वारा किया गया अंकन और संयमित रूप में कालिदास और प्रियंगु का प्रणयबन्ध लाजवाब है। साथ ही साथ न्यायसमिति पर करारा व्यंग्य करने वाला कालिदास तथा सम्राट चन्द्रगुप्त के अनुरोध पर उनके

सुझावों को ठुकराने वाला कालिदास और अपनी रचना पर गर्व करने वाला कालिदास निश्चय ही विलोभनीय है।

तुलनात्मक दृष्टि से जब हम दोनों नाटककारों के नाटकों में चित्रित दो कालिदासों को देख पाते हैं तब हमें ऐसा लगता है कि दोनों नाटककारों ने महाकवि कालिदास को अपनी-अपनी दृष्टि में रखकर मंच पर प्रस्तुत किया है। दोनों कालिदासों में कवि या नाटककार के रूप में दोनों की महत्ता दर्शनीय है फिर भी दोनों कालिदासों में कुछ अन्तर भी है। मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" में चित्रित कालिदास भले ही दुर्बल हो, कमजोर हो, हारा हुआ हो, टूटा हुआ हो, मोहभंग से व्यथित हुआ हो फिर भी वह आज के रचनाकार का एक अलग प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई पडता है। किसी महान कवि या लेखक में भी कमजोरी हो सकती है। "आषाढ़ का एक दिन" में चित्रित कालिदास मानवीय धरातल पर अंकित आधुनिक कालिदास है। इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास ज्यादातर ऐतिहासिक होते हुए भी उतना ही आधुनिक है जितना 'आषाढ़ का एक दिन' का कालिदास; लेकिन अंतर यह है कि सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" का कालिदास स्वाभिमानी है, किसी सम्राट या नेता के सामने सिर झुकाने वाला अपमानित कालिदास नहीं है बल्कि श्रेष्ठ रचनाकार के रूप में राजसम्मान की परवाह न करने वाला और रचनाकार की स्वतंत्रता पर अटूट विश्वास रखने वाला समर्थ कालिदास है।

संक्षेप में, यद्यपि "आषाढ़ का एक दिन" में चित्रित कालिदास और "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास अधिकांश रूप में एक-दूसरे से भिन्न नजर आते हैं, फिर भी रचनाकार की पात्र-सृष्टि में हिन्दी नाट्य-साहित्य में उतने ही अजर और अमर हैं जितने संस्कृत साहित्य में कविकुलगुरू महाकवि कालिदास अजर और अमर हैं।